PAGE No. 9
DATE 8/3/08

FISSURE EYES:— Tumor.

RAJESH NAIR [redacted]

मुझे 7-8 सालों से पाइल्स / फिशर का प्रॉब्लम रहा है। इस वजह से स्टूल में रक्त जाता रहा। काफी सारी अलोपैथिक दवाईयां खाने के उपरान्त एक मित्र ने डॉक्टर साहब के बारे में बताया और इस तरह से मैंने चिकित्सा प्रारंभ की।

और हालांकि दवाई का तुरन्त असर पड़ा फिर भी मैंने दवाई चालू रखा है ताकि लम्बे समय तक कोई तकलीफ न हो।
निश्चित तौर पे यह कहना होगा के डाक्टर साहब की दवाई वह काम कर गई जो काफी सारे अलोपैथिक दवाईयां नहीं कर पायी और बिना कोई साईड इफेक्ट्स के।

इसके अलावा मेरी बाईं आँख में अचानक एक सूजन सा आया था, जिसके लिये भी मैंने डाक्टर से दवाईयां ली। वह सूजन भी बहुत कम हुआ है।

मैं समझता हूं कि दवाई से ज्यादा डाक्टर का मरीज के साथ व्यवहार बीमारी को कम करने में सार्थक होती है। हालांकि पहले पहले नये Patients को भले यह लगे कि डाक्टर की कही गई बातें आज के दौड़धूप के जीवन में असाध्य है लेकिन हमें यह ध्यान रखना चाहिये कि वह हमारी भलाई और तन्दुरुस्ती को ध्यान में रखकर कही जा रही है।

हां यह सच है कि डक्टर हर मरीज पर काफी वक्त बिताते हैं लेकिन वह मरीज के बिमारी का इतिहास पूरी तरह जानने के लिये एवं सही दवाई का निश्चय करने हेतु होता है।

Rajesh Nair

Scanned by CamScanner